पीएम-प्रणाम

चर्चा में क्यों ?

- आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (CCEA) के द्वारा पीएम-प्रणाम योजना को मंजूरी प्रदान की गयी।

आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (CCEA)के बारे में

- CCEA का नेतृत्व भारत के प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता है।
- CCEA समय-समय पर आर्थिक स्थितियों की समीक्षा करती है।
- यह मूल्य नियंत्रण, FDI , सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि पर महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय लेती है।

पीएम-प्रणाम योजना क्या है?

- PM-PRANAM योजना, भूमि सुधार, जागरूकता, पोषण और सुधार के लिए चलाए जाने वाला एक कार्यक्रम है।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करना और रसायनों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देना है, ताकि हरित विकास को बढ़ावा मिल सके तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सके।
- इसमें राज्य सरकारों की भागीदारी शामिल है। इसके साथ-साथ केंद्र उन राज्यों को प्रोत्साहित करेगा, जो रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करके बचाई गई सब्सिडी से वैकल्पिक उर्वरक अपनाएंगे।

पीएम-प्रणाम योजना के लाभ

- PM-PRANAM योजना से भारत में करीब एक करोड़ से अधिक किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है।
- यह प्राकृतिक पोषक तत्वों सहित वैकल्पिक पोषक तत्वों और उर्वरकों के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।
- रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होगा।
- भारत में कृषि उपज और उत्पादकता में वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।
- कंप्रेस्ड बायोगैस के उपयोग को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे कचरे को कम करने और स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन करने में मदद मिलेगी।
- पीएम-प्रणाम का कुल परिव्यय ₹3.7 लाख करोड़ है; 10.25% रिकवरी दर के लिए गन्ने का FRP ₹10 बढ़ाकर ₹315 प्रति क्विंटल कर दिया गया।
- CCEA ने गन्ने के उचित और लाभकारी मूल्य (FRP) में भी 10 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की। चीनी, सीजन 2023-24 (अक्टूबर-सितंबर) के लिए FRP 10.25% की मूल रिकवरी दर के लिए ₹315 प्रति क्विंटल होगी।

यूरिया सब्सिडी योजना

- केंद्र के अनुसार, पीएम प्रणाम योजना में विभिन्न योजनाओं का एक समूह शामिल है जो किसानों की आय को बढ़ावा देगा, प्राकृतिक/जैविक कृषि को मजबूत करेगा, मिट्टी की उत्पादकता को फिर से जीवंत करेगा और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।
- CCEA द्वारा यूरिया की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए यूरिया सब्सिडी योजना को जारी रखने की मंजूरी प्रदान की गयी।
- यह 2023-24 की खरीफ फसलों के लिए हाल ही में स्वीकृत ₹38,000 करोड़ की पोषक तत्व-आधारित सब्सिडी से अलग, पीएम-प्रणाम तीन वर्षों के लिए यूरिया सब्सिडी के लिए ₹3,68,676.7 करोड़ के लिए प्रतिबद्ध है।
- "2025-26 तक, 195 लाख टन पारंपरिक यूरिया के बराबर, 44 करोड़ कंटेनरों की उत्पादन क्षमता वाले 8 नैनो यूरिया संयंत्र चालू किये जाएंगे।"
- गोबरधन संयंत्रों से जैविक उर्वरकों को बढ़ावा देने के लिए बाजार विकास सहायता (MDA) के लिए ₹1,451.84 करोड़ स्वीकृत किए गए हैं।

गोबरधन पहल-

- इसके तहत स्थापित बायोगैस संयंत्रों/संपीडित बायोगैस (CBG) संयंत्रों से उप-उत्पाद के रूप में उत्पादित किण्वित कार्बनिक खाद (FOM)/तरल FOM/फॉस्फेट समृद्ध कार्बनिक खाद (PROM) को बढ़ावा दिया जाएगा।
- "ऐसे जैविक उर्वरकों को भारत ब्रांड FOM, LFOM और PROM के नाम से ब्रांड किया जाएगा। इससे एक ओर जहाँ फसल अवशेषों के प्रबंधन की चुनौती और पराली जलाने की समस्याओं से निपटने में सुविधा होगी, वहीं पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रखने में भी मदद मिलेगी।

- इसके साथ ही किसानों के लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत भी उपलब्ध होगा। किसानों को सस्ती कीमतों पर जैविक उर्वरक प्राप्त होंगे।

गन्ना किसानों को होगा लाभ

- गन्ना FPR वृद्धि से गन्ना किसानों को लाभ होगा।
- "इसके अलावा, गन्ना किसानों के हितों की रक्षा के उद्देश्य से, सरकार द्वारा उन चीनी मिलों के मामले में कोई कटौती नहीं की जाएगी जहाँ रिकवरी 9.5% से कम है।
- 2022-23 में चीनी मिलों द्वारा ₹1,11,366 करोड़ मूल्य का लगभग 3,353 लाख टन गन्ना खरीदा गया। जिसका एक बड़ा हिस्सा इथेनॉल उत्पादन में उपयोग किया जाता है।
- केंद्र के अनुसार "पेट्रोल के साथ मिश्रित इथेनॉल (EPB) कार्यक्रम ने विदेशी मुद्रा बचाने के साथ-साथ देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत किया है और आयातित जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम कर दी है, जिससे पेट्रोलियम क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिली है।"

चंद्रयान-3

चर्चा में क्यों ?

- भारत का तीसरा चंद्र मिशन चंद्रयान-3 देश के एकमात्र अंतरिक्षयान श्रीहरिकोटा से 13 जुलाई को दोपहर 2.30 बजे लॉन्च किया जाएगा। अंतरिक्ष यान एक महीने से अधिक समय तक यात्रा करेगा और संभवतः 23 अगस्त के आस-पास चंद्रमा की सतह पर उतरेगा।

चंद्रयान-3 के बारे में

- चंद्रयान-3, चंद्रयान-2 का अनुवर्ती मिशन है, जो चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और घूमने की संपूर्ण क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें लैंडर और रोवर कॉन्फ़िगरेशन शामिल हैं।
- इसे LVM3 द्वारा SDSC SHAR, श्रीहरिकोटा से लॉन्च किया जाएगा। प्रोपल्शन मॉड्यूल लैंडर और रोवर कॉन्फ़िगरेशन को 100 किमी. चंद्र कक्षा तक ले जाएगा।
- प्रणोदन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और ध्रुवीय मीट्रिक माप का अध्ययन करने के लिए रहने योग्य ग्रह पृथ्वी (SHAPE) पेलोड का स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री है।
- **लैंडर पेलोड:** तापीय चालकता और तापमान को मापने के लिए चन्द्र सतह थर्मोफिजिकल प्रयोग (ChaSTE); लैंडिंग स्थल के आस-पास भूकंपीयता को मापने के लिए चंद्र भूकंपीय गतिविधि उपकरण (ILSA); प्लाज्मा घनत्व और इसकी विविधताओं का अनुमान लगाने के लिए लैंगमुइर जाँच (LP)। नासा के एक निष्क्रिय लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे को चंद्र लेजर रेंजिंग अध्ययन के लिए समायोजित किया गया है।

- **रोवर पेलोड :** लैंडिंग स्थल के आस-पास मौलिक संरचना प्राप्त करने के लिए अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (APXS) और लेजर प्रेरित ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप (LIBS)।
- चंद्रयान-3 में एक स्वदेशी लैंडर मॉड्यूल (LM), प्रोपल्शन मॉड्यूल (PM) और एक रोवर शामिल है, जिसका उद्देश्य अंतर-ग्रहीय मिशनों के लिए आवश्यक नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करना और प्रदर्शित करना है।
- लैंडर में एक निर्दिष्ट चंद्र स्थल पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को तैनात करने की क्षमता होगी जो अपनी गतिशीलता के दौरान चंद्र सतह का इन-सीटू रासायनिक विश्लेषण करेगा। लैंडर और रोवर के पास चंद्र सतह पर प्रयोग करने के लिए वैज्ञानिक पेलोड हैं।
- PM का मुख्य कार्य LM को लॉन्च वाहन इंजेक्शन से अंतिम चंद्र 100 किमी. गोलाकार ध्रुवीय कक्षा तक ले जाना और एलएम को पीएम से अलग करना है। इसके अलावा, प्रोपल्शन मॉड्यूल में मूल्यवर्धन के रूप में एक वैज्ञानिक पेलोड भी है जो लैंडर मॉड्यूल के अलग होने के बाद संचालित किया जाएगा।

चंद्रयान-3 के मिशन उद्देश्य हैं:

- चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन करना।
- रोवर को चंद्रमा पर घूमते हुए प्रदर्शित करना।
- यथास्थान वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना।
- एकीकृत विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर के लिए लैंडिंग साइट पिछले मिशन की तरह ही रहेगी: चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास 70 डिग्री अक्षांश पर सफल होने पर चंद्रयान-3, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला मिशन बन जाएगा।
- इस स्थान का चयन इसलिए किया गया क्योंकि इसमें कई क्रेटर हैं जो स्थायी रूप से छाया में रहते हैं, जिससे जल की बर्फ की जाँच की संभावना बढ़ जाती है। चंद्रयान-1, जो नासा के पेलोड भी ले गया था, चंद्रमा पर जल और हाइड्रॉक्सिल (OH) अणुओं की उपस्थिति की पुष्टि करने में सहायक था।
- यह मिशन भारत को अमेरिका, रूस और चीन के बाद चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बना देगा।
- भारत के लिए स्थिति खुली है क्योंकि पिछले चंद्रयान मिशन के बाद लॉन्च किए गए इज़राइल और जापान के लैंडर मिशन भी विफल रहे थे। वर्तमान मिशन, पिछले मिशन के लिए योजना बनाई गई योजना के समान प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करेगा, जिसमें अंतरिक्ष यान की कक्षा को कई बार बढ़ाया जाएगा जब तक कि यह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर न निकल जाए तथा अंतरिक्ष यान चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के अंतर्गत आ जाए।

अमेरिका में मलेरिया का पुनरुत्थान

चर्चा में क्यों ?

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने पिछले दो महीनों में फ्लोरिडा और टेक्सास में मलेरिया के पांच मामलों की पहचान की है।
- 20 वर्षों में पहली बार अमेरिका में ऐसे मलेरिया मामलों की पहचान की गयी है, इस कारण अमेरिकी रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (CDS) द्वारा चिकित्सकों से अज्ञात मूल के बुखार वाले व्यक्तियों में मलेरिया के इलाज का सुझाव दिया गया है।
- मलेरिया एक परजीवी संक्रमण है जो संक्रमित मच्छर के काटने से फैलता है।

मलेरिया क्या है?

- मलेरिया या दुर्वात एक वाहक-जनित संक्रामक रोग है जो प्रोटोज़ोआ परजीवी द्वारा फैलता है। यह मुख्य रूप से अमेरिका, एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों के उष्ण तथा उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में फैला हुआ है।
- मलेरिया सबसे प्रचलित संक्रामक रोगों में से एक है तथा बड़ी जन-स्वास्थ्य समस्या है। यह रोग प्लाज्मोडियम गण के प्रोटोज़ोआ परजीवी के माध्यम से फैलता है। केवल चार प्रकार के प्लाज्मोडियम (Plasmodium) परजीवी मनुष्य को प्रभावित करते हैं जिनमें से सर्वाधिक खतरनाक प्लाज्मोडियम फैल्सीपैरम (Plasmodium falciparum) तथा प्लाज्मोडियम विवैक्स (Plasmodium vivax) माने जाते हैं, साथ ही प्लाज्मोडियम ओवेल (Plasmodium ovale) तथा प्लाज्मोडियम मलेरिये (Plasmodium malariae) भी मानव को प्रभावित करते हैं। इस समस्त समूह को 'मलेरिया परजीवी' कहते हैं।
- मलेरिया के परजीवी का वाहक मादा एनोफ़िलेज़ (Anopheles) मच्छर है। इसके काटने पर मलेरिया के परजीवी लाल रक्त कोशिकाओं में प्रवेश करके बहुगुणित होते हैं जिससे रक्तहीनता (एनीमिया) के लक्षण उभरते हैं (चक्कर आना, साँस फूलना, द्रुतनाड़ी इत्यादि)। इसके अलावा अविशिष्ट लक्षण; जैसे कि बुखार, सर्दी, उबकाई और जुकाम आदि भी देखे जाते हैं। गंभीर मामलों में मरीज मूर्च्छा में जा सकता है और मृत्यु भी हो सकती है।

KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADACHAN
THE STUDY
An Institute for IAS

विश्व में मलेरिया की क्या स्थिति है?

- नवीनतम उपलब्ध विश्व मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में दुनिया की लगभग आधी आबादी को संक्रमण का खतरा बना हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष के दौरान दुनिया भर में मलेरिया के अनुमानित 247 मिलियन मामले और 619,000 मौतें हुईं।
- इनमें से करीब 95 फीसदी मामले अफ्रीका से थे।
- सतत विकास लक्ष्यों के अंतर्गत मलेरिया की घटनाओं को 90 प्रतिशत तक कम करने, मलेरिया से मृत्यु दर को 90 प्रतिशत तक कम करने, कम से कम 35 देशों में मलेरिया को खत्म करने और 2030 तक मलेरिया मुक्त सभी देशों में पुनरुत्थान को रोकने का लक्ष्य निर्धारित किया है।
- इस दिशा में, पहले से ही 35 देश ऐसे हैं जिन्होंने विश्व मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार 2021 में 1,000 से कम स्वदेशी मलेरिया के मामले दर्ज किए हैं।

भारत का प्रदर्शन कैसा है?

- हालाँकि, भारत में मलेरिया के मामलों में गिरावट आ रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया के अनुसार 2015 और 2022 के बीच मलेरिया के मामलों में 85.1 प्रतिशत की गिरावट और मृत्यु के मामलों में 83.36 प्रतिशत की गिरावट आई है। यह अभी भी उन देशों में से एक है जहाँ संक्रमण का एक उच्च भार विद्यमान है।
- 2021 में, दुनिया में मलेरिया के 1.7 प्रतिशत मामले और सभी मौतों में से 1.2 प्रतिशत भारत में दर्ज की गईं। नवीनतम विश्व मलेरिया रिपोर्ट के अनुसार, WHO के दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में मलेरिया के 79 प्रतिशत मामले और 83 प्रतिशत मौतें होती हैं।

KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADACHAN
THE STUDY
An Institute for IAS

क्या जलवायु परिवर्तन के कारण मलेरिया का पुनरुत्थान हो सकता है?

- "मलेरिया फैलाने वाले मच्छर तापमान के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं, वे केवल कुछ विशिष्ट तापमान पर ही पनप सकते हैं जो न बहुत गर्म हो और न बहुत ठंडा। ओडिशा जैसे अधिक बोझ वाले राज्य में तापमान बढ़ता है, तो मलेरिया फैलने के महीनों की संख्या कम हो सकती है। लेकिन, हिमाचल जैसे तलहटी राज्यों में अगर तापमान बढ़ता है, तो मलेरिया अधिक महीनों तक फैलता रहेगा।
- लैंसेट में प्रकाशित 2021 के एक अध्ययन के अनुसार बढ़ते तापमान से अफ्रीकी क्षेत्र, पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र और अमेरिका के उष्णकटिबंधीय उच्चभूमियों में अतिरिक्त 1.6 महीनों के लिए मलेरिया के लिए जलवायु उपयुक्तता बढ़ने की संभावना है।

जीडीपी वृद्धि दर

चर्चा में क्यों ?

- S&P के अनुसार, वित्त वर्ष 2027 तक भारत की औसत विकास दर 6.7% रहने की संभावना होगी।
- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के द्वारा चालू वित्त वर्ष में GDP वृद्धि दर 6.5% रहने का अनुमान लगाया गया है।

GDP क्या है?

- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एक विशिष्ट समय अवधि में देश की सीमाओं के भीतर उत्पादित सभी तैयार वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक या बाजार मूल्य है।
- विगत वित्त वर्ष में 7.2% की वृद्धि दर से मंदी लाने वाले कारकों में कमजोर बाह्य वातावरण, रुकी हुई माँग में कमी और निजी उपभोग गतिविधि शामिल हैं।
- S&P ग्लोबल रेटिंग्स के वरिष्ठ अर्थशास्त्री के अनुसार घरेलू खपत के कारण वित्तीय वर्ष 2026-27 तक भारतीय अर्थव्यवस्था की औसत वृद्धि दर 6.7% रहने की उम्मीद है। चालू वित्त वर्ष में आर्थिक वृद्धि लगभग 6% रहने की उम्मीद है, जो 2022-23 में दर्ज 7.2% से कम है।
- हाल ही में कुछ समय में खुदरा महंगाई दर घटकर 2 साल के निचले स्तर 4.25 फीसदी पर आ गई है। RBI को मुद्रास्फीति को (+/-) 2 प्रतिशत के बैंड के साथ 4% पर रखने का आदेश दिया गया है।

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स

- ये क्रेडिट रेटिंग प्रतीक क्रेडिट योग्यता और क्रेडिट गुणवत्ता को संप्रेषित करने का एक सरल, कुशल तरीका प्रदान करते हैं।
- यह वैश्विक रेटिंग पैमाना दुनिया भर में जारीकर्त्ताओं और मुद्दों के सापेक्ष क्रेडिट जोखिम के मूल्यांकन के लिए एक बेंचमार्क प्रदान करता है।

THE STUDY
An Institute for IAS